भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2380
19 दिसंबर, 2025 को उत्तर के लिए

ओडिशा में इस्पात क्षमता

2380. श्री देबाशीष सामंतरायः

क्या **इस्पात** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या चालू वित्त वर्ष में ओडिशा में इस्पात उत्पादन में वृद्धि हुई है;
(ख) राज्य में हरित इस्पात प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;
(ग) क्या मंत्रालय राउरकेला इस्पात संयंत्र की क्षमता बढ़ाने की योजना बना रहा है;
(घ) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इस्पात इकाइयों को लौह अयस्क की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं; और
(ङ) ओडिशा के इस्पात क्षेत्र में विदेशी निवेश का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री (श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा)

(क): अप्रैल, 2025 से अक्टूबर, 2025 की अवधि के दौरान, ओडिशा में क्रूड स्टील का उत्पादन 18.07 मिलियन टन था, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 18.8% की वृद्धि दर्शाता है।

(ख): ओडिशा सहित भारत में ग्रीन स्टील के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक उपाय किए हैं, जिनमें शामिल हैं: कम उत्सर्जन वाले इस्पात को परिभाषित और वर्गीकृत करने के लिए मानक प्रदान करने हेतु ग्रीन स्टील के लिए वर्गीकरण जारी करना; नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत इस्पात क्षेत्र में हाइड्रोजन के उपयोग हेतु पायलट परियोजनाएं आवंटित करना; सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा जनवरी, 2010 में राष्ट्रीय सौर मिशन की शुरुआत; पर्यावरण संरक्षण (प्रयोग अवधि समाप्त वाहन) नियम, 2025 लागू करना, जिसमें वाहन निर्माताओं को वाहन के प्रकार एवं पुनर्प्राप्त सामग्री के आधार पर वार्षिक स्क्रैपिंग लक्ष्य पूरे करना आवश्यक है; वर्ष 2019 में इस्पात स्क्रैप पुनर्चक्रण नीति की अधिसूचना।

(ग) से (ङ): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है और सरकार प्रासंगिक नीतियों के माध्यम से इस क्षेत्र के विकास का समर्थन करती है। उत्पादन, विस्तार, निवेश, आधुनिकीकरण, रोजगार आदि से जुड़े निर्णय बाजार की स्थितियों तथा कंपनियों के प्रौद्यो-वाणिज्यिक विश्लेषण पर निर्भर करते हैं। सरकार ने एमएसएमई इस्पात इकाइयों के लिए लौह अयस्क की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु कई कदम उठाए हैं, जिनमें खनन एवं खनिज नीति सुधार, जब्त एवं बंद पड़ी खदानों का शीघ्र प्रचालन तथा सीपीएसई लौह अयस्क उत्पादकों द्वारा उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि शामिल हैं।

*****